

161-II

161-II

161-II	161-II	161-II
161-II	161-II	161-II
161-II	161-II	161-II

१८१-३

महाराष्ट्र के राजा महाराज महाराज

२ नमः शिवाय सर्वत्र सर्वत्र

२

ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ

ॐ ह्रीं देवा तानना क विधि ॥ इ १ पञ्जारु न उता ना ॥
वा २ सी गे धी उ ॥ तायः ॥ ताय धी ॥ द १ सिक्क न
क उ १ कृष्ण काः इ २ समय धा ना ॥ धी ति इ स न कृष्ण ॥
॥ ॐ ह्रीं दे कृष्ण ॥ इ १ पञ्जारु व ॥ पा ५
स क ध उ ॥ इ ३ का मा चिः तायः ॥ पा ताय ॥

धृः सिक्क नः ॥ श्री कृष्णः सा इ इः ॥ ग्य १ यान
व कि २ न च किः पा २ श्रु वा नः ॥ पा १ सना वः ॥ प
क १ तानना किः ॥ वि ॥ पा नः वा कृः म ध रु न
सा मा य रु नः सिक्क सिः दाः ॥ ग्य १ ग्य वः ना
ये इ नान प रैः कृ न उजा किः वा क्ष कि ज

किं फलं : किं ह ॥ इ ॥ समय धना ॥ इ ॥ नि सना
 रुय मोहा : ॥ वि हि ॥ से सा द्या : धन सा द्या ॥ ध्रु
 तं ॥ वि हि या य म वा ग य ग वि धि ॥ ॥ ० ॥ वि
 या इ से न क क ॥ क न स : म न क न स : ज्ञ न : ग न स
 सा हा का न : स क : स ग म स : स क स क : स क मू ० :

मंगः शृङ्ग शृङ्ग निः शी न न। श्रेः नाग वः यि ना
काः ज नि दे वः शी ह माः उ दिः नो ह मा थू गे थ
य ॥ धू न का जः ७ यो द्य मू जा म जा ग थः ० ० ह
म चा ग व नि पि यः स्व सि सा नः गु नू म लु नः नो
क यो न पू जाः वि ष्य ऊ नः नि ना ऊः म न दः ग न

चाःसकैःनकायःकृष्णनका नगायनडाका
या॥धनाडायनःपच्छिमसकैःस्वःसिःश्रामश्र
तपःद्वननगायाडाःसागरदकाःस्रधृच्छि १००३
डायःधायसंगयावःसिष्णनकायःवाचाःस
कैवियःसिरुनूयःवडनका॥खानकिःगुन

पूजाःदंभदकुनास्रगिःकसारुडकःआसि
रवाखानवियःनवियसमयावियाडाःश्रया॥
धगिइसनकृष्ण॥ ॥उंनमशीवजसखा
य॥ॐहिकृष्णमानकधपनधूनकाडा॥सूर्या
द्य॥गुनूपाताद्यःगुनूसशुनःदिगुनिःधूनका

स
वः कन न्यासः ऊरु श्रान्तः प्रथमाङ्गिः ह्ना ना
ह्ना ॥ दत्त गाङ्गि धून कावथनः ॐ ह्रि मवा
तः वनि पीयसः सस्त्रि सस्त्रि नः गुन मस्तु नः
कपानवनिः विस्त्रि नः नि नाङ्गः सत रुः
नचास्तगनः पितरुयाडा नि विज्ञान कृत्य केः

मासकनके ॥ वाके ॥ ॐ सर्वपापमर्दयस्व हा
॥ कानः चिकन सायकः नू सिधनकेः श्रव नः
ननः मान कृत्य के ॥ धाय सगयाडाः सनाडासा
ॐ ह्रि पतासिः सिध्न नत दगयाडा दत्त याकः म
वा गयती माय ॥ ॐ ह्रि वस्त्र सायः सिध्न न द्याय

के ॥ उं उ आ ता ५ ॥ रु निं च्चा यः श्रुवान विच ॥ उं
ॐ द त सर्व विद्या नाः त धा उ क न म स्के रीः श्रु वा
क पू ज ना थ यः म र्क य च क ना रु व ॥ उं व श्रु म
त्य ह ॥ थ न स त र द का नः कृ त्वा य क ॥ उं श्रु म
ॐ व द स द्वा प्रि स ता नू व रु ना गु प्र ग नि ठि मा ना व

प्र वि ति म धा स्वा हा ॥ थ न श्रु नि द व न न्व य ॥ उं
सर्व वृ ध यो अ म ति म हा म कृ त य ति कृ स्वा हा ॥
उं आ ॐ ह स्वा हा ॥ हा हाः उ कि न ना य ॥ उं म र्क
वृ ध व रु द स म नू स म य व द्वा ना स्वा हा ॥
थ न गो रु न ल म ध न ॥ स ना व सः ना य ऊ च ना न

पतसः व्यान मय ॥ धन सना नया स पूजा ॥ धन
श्रुयः नव किम सा ॥ वाक ॥ उं ग्री दू न व न क र क
न क सः च न न क म ना यः श्रु यी गि दू खा हा ॥
स ख पूजाः धन कू स ख नः ना य ऊ च ना यी दू न स
ना व न ना य ख य ॥ दि ग र्गः कू र्ग ना य ॥ धन चः

कि र नूः व्यान स मयः ना य ऊ ना न ड ॥ स न का वः
श्रु वा न न दि ना वः ना हा नि पा र्ग ना न चि क र
कू स न खि प म न चि क ॥ हा साः उ दिः इ श्रु
नः ल ख ध नः श्रु नि द वः वृ गु नि खि क वा
या डः श्रु च च्छ ग्व श म य ॥ श्रु च ति य ना ग

II-171

संस्कृत भाषा के लिए

II-171

LIBRARY OF THE
UNIVERSITY OF CHICAGO

यकाडा॥ इरुमलुयस्वउउयक॥ वाक॥ उं
ॐ सीता चमगातामृदाम्भाननाकप्रलाकचो॥ गेदि
खापनिनीः वृद्धप्रस्ययकिर्किती॥ धनअरुम
कानेसः॥ सिरुनसकनपूजाः॥ निः॥ मः॥ नाः॥ स
कः॥ सिरुनय॥ धायसंगयः॥ योरुनयागश्री

हागेवीय॥ सूनायागनयीरुनधियकेः॥ क
सायनः॥ काकायाडाः॥ सनाडा॥ संगयः॥ धनसंग
वियः॥ वस्तुयः॥ द॥ दकिताः॥ माताइत्यागः॥
सिरुनयः॥ वडनकाः॥ बाधिरुयः॥ धनपूनाः॥
माहावेनीः॥ दीगुवनिः॥ वाकपूजाः॥ खानकि

५१

तनयः पुनः पूजाः कृताः निसर्गः किं ॥
 कृमायनः के गोहि कृकः आसिखा स्वातः स
 खादृगिः कन सनडा ज्ञायः थन च्छायः के
 मानि च्छायः थूगि ॥ कामानि सख वियः या
 ननया चके ॥ ॥

[illegible]

सिगा॥ वृषि यं धा यम्यनि गुरु कृति न मां भूत ॥

॥ ३ ॥ नमन वि तम सा सा ए ॥ स्वत व न पु उक्

रि ता ॥ अंति अंत कृ त द सा वा व कृ ति न मां भू त

॥ ४ ॥ लन वे त म सा म्ब ए ॥ त्रु व न पु का सि ता

॥ व्र म्बे नि म्ब य ए वे त अ ति र्प न मां भू त

॥ ५ ॥

हि मे रु न व म्बे वा म्ब ॥ म्बे ल व म्बे सि ते र्प

व व म्बे व म्बे वा व म्बे व म्बे न मां भू त ॥ ६ ॥ अ

प ना वि प उ न द वि त्रा ला व वि व सा रि त र

ये त क वि स व्ब अ वि स व द व न मां भू त ॥ ७ ॥

॥ सुनिवेति वज्रिनिषिंरपवासा ऊर्षिदभासुर्दे रस्य
तनिल सुसमन ॥ स्या मज्जम वज्र ॥ १० ॥
सुसुनिवेति वज्रिनिषिंरपवासा ऊर्षिदभासुर्दे रस्य
तनिल सुसमन ॥ स्या मज्जम वज्र ॥ १० ॥
सुसुनिवेति वज्रिनिषिंरपवासा ऊर्षिदभासुर्दे रस्य
तनिल सुसमन ॥ स्या मज्जम वज्र ॥ १० ॥
सुसुनिवेति वज्रिनिषिंरपवासा ऊर्षिदभासुर्दे रस्य
तनिल सुसमन ॥ स्या मज्जम वज्र ॥ १० ॥

मासंता ॥ नकुपितरु व भयिता ॥ १० ॥ वल्लरुमि
व्रीतिवृत्ता पूर्वस्म नमो नोहा ने र ह न व वृत्ता न मज्जम
व स र न न न मा दकु त ॥ ११ ॥ उत्रा विषय उत्रा क कु क कु क
न क म निसिषिषि नि र विषय र व का र पु र ता रा उ सिं ह न
मा दकु त ॥ १२ ॥

पुर्वे व प्रणि

नागं हे न वा ॥ पूर्व व प्रणि स मा नू ॥ कनक
वर्णं नू ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥
वा स ना प्र प्र व न ॥ कनक ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥
२३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥
२३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥

हे न मा ३ पु पा ना ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥
२३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥
२३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥
२३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥
२३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥

॥ ॐ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कलि
मन्त्रादिः सप्तमः ॥ २ ॥ श्रवणं कर्माणि मयत्नवा
सनात् न केन कावचमुक्तं किं सदा ॥ ॐ ॥ न
मो भगवते नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते
नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते
नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते

वासुदेवाय नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते
नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते
नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते
नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते
नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते